(6) असीमितता का अभाव-
अधिकार असीमित नहीं होते हैं। असीमित अधिकार समाज में संभव नहीं है। व्यक्ति को केवल उन्हीं कार्यों को करने का अधिकार है जिससे दूसरों के समान अधिकारों को कोई धक्का न पहुँचता हो।

(7) अधिकार और कर्तव्य में अन्योन्याश्रय संबंध है-



अधिकार और कर्तव्य परस्पर आश्रित हैं। एक व्यक्ति का अधिकार दूसरे का कर्तव्य हो जाता है। कर्तव्यरहित अधिकार का कोई मूल्य नहीं होता।

Dr. Pragya Rai, Asst. Prof. Pol. Science,
Mahamaya College
जून/June BA-1, Paper-2, Unit-8(C)

सोमवार Monday 10 1986

## अधिकार की विशेषतायें या आवश्यक तत्व - II

(4) सामाजिक हित - अधिकार में सामाजिक हित का भाव छिपा रहता है। इसका उद्देश्य और ध्येय दूसरों की भलाई करना होता है। इसलिये ऐसी मांगों को अधिकार की स्थिति प्रदान की जाती है, जो

मंगलवार Tuesday 11

सामाजिक हित के पक्ष में हों।

(5) अधिकार विकासशील - मनुष्य की आवश्यकताओं के अनुरूप अधिकारों का स्वरूप भी बदलता रहता है। सामाजिक विकास के साथ उनका भी विकास होता रहता है।